ASKOT PRIMATE PROJECT

Conserving Himalayan Primates

Drawing Book

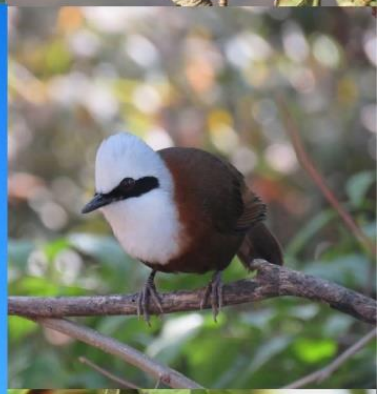

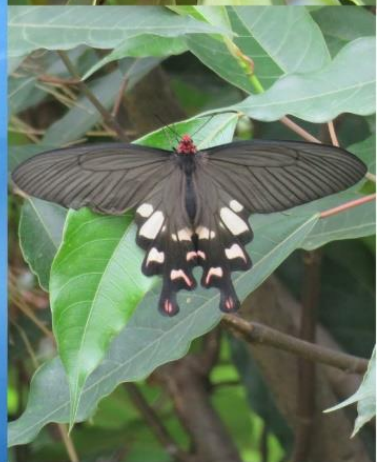

हमारी पहचान

हम हिमालय में कार्यरत संरक्षणवादी लोगों का एक समूह हैं। हमारा काम मुख्य रूप से हिमालय के पहाड़ियों में पौधों, जानवरों और अन्य जीवन-स्वरूपों का अध्ययन करना है, और हम उन जीवो को बचाने के लिए प्रयासरत है जो खतरे में हैं। हम हिमालयी लोगों के बेहतर जीवनयापन के लिए उनकी संस्कृति, पारंपरिक आजीविका, और जंगल, नदियों और पहाड़ियों के संरक्षण के लिए प्रयास करते हैं जो उन्हें पालन करते हैं।

अस्कोट प्राइमेट प्रोजेक्ट - मानव-बंदर संघर्ष

ऐसी दुनिया में जो तेजी से विकासशील हैं, जंगली जानवरों के रहने के लिए स्थान कम होता जा रहा हैं। आधुनिक समाज में मनुष्य की जरूरतों को प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों की कीमत पर पूरा किया जाता है। और जानवरों कि तरह बंदरों के प्राकृतिक आवासों का विनाश होने से और जिससे उनके लिए प्राकृतिक भोजन की कमी भी हो जाती है, ये अक्सर मनुष्यों के साथ संघर्ष मे शामिल हो जाते हैं और कृषि फसलों को हानि पहुचातें हैं। इसलिए हमारा प्रोजेक्ट इस तरह के संघर्षो का अध्ययन कर रहा है ताकि उन्हें कम करने के तरीके तलाश सकें।

The Rufford Foundation
www.rufford.org

Primate Conservation, Inc.

Himalayan Exploration, Conservation and Livelihood Programme (HECaLP)
हिमालयी अन्वेषण, संरक्षण और आजीविका कार्यक्रम

Askot Primate Project (APP)

ASKOT PRIMATE PROJECT • Conserving Himalayan Primates •

अस्कोट प्राइमेट प्रोजेक्ट

Towards a peaceful coexistence of humans and non-human primates

मनुष्यों और बंदरों की एक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की ओर

बंदरों को क्यों बचाना चाहिए

बंदर वनों के स्वास्थ्य को और उनको अच्छी तरह से बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कई पौधों के फल खाते हैं जो मनुष्यों और अन्य जानवरों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। जब ये मलत्याग करते हैं, तो उनके मल में उन फलों के बीज होते हैं जो बाद में अंकुरित होते हैं और नए पौधों में बढ़ते हैं। इस तरह ये उन पौधों को अलग-अलग जगहों में फैलाते है जो उनकी संख्या को बनाए रखने में मदद करते हैं। बंदर प्रकृति के लिए अन्य सेवाओं के अलावा, हानिकारक कीड़ों की आबादी को भी नियंत्रित करते हैं।

अपने बंदरों को जाने !

रीसस बंदर/लाल बंदर (*Macaca mulatta*)

ये बंदरों के सबसे आम प्रजाति हैं। इनकी पूंछ छोटी और पीठ भूरे रंग का होता है। वयस्कों का पिछला भाग लाल होता हैं। ये बंदर मानव बस्तियों के पास रहना पसंद करते हैं और ज्यादातर फसलों के नुकसान और उपद्रव से जुड़े होते हैं। ये कभी-कभी निर्भय भी हो जाते हैं।

हिमालयी लंगूर/गुणा (*Semnopithecus schistaceus*)

ये बड़े वन-बंदर हैं जिनका शरीर ज्यादातर मक्खनी-सफेद होता है और जिनके चेहरे, हाथ और पैर काले रंग के होते हैं। इन बंदरों की पूंछ बहुत लंबी होती है और कभी-कभी ये भोजन की तलाश में फसल क्षेत्र में आ जाते हैं। ये ज्यादातर मनुष्यों से डरते हैं।

असमी बंदर/काला बंदर (*Macaca assamensis*)

ये जंगल के दुर्लभ बंदर हैं जो रीसस बंदर के तरह दिखते हैं, लेकिन आकार मे उनसे बड़े होते हैं। इनकी पीठ गहरे रंग की, पूंछ अपेक्षाकृत लंबी होती है, और चेहरा मैला-सफेद (पुरुष) या गुलाबी (मादा) होता है। ये कभी-कभी भोजन की तलाश में फसल क्षेत्रों में आते हैं। आम तौर पर ये निडर होते हैं, लेकिन मनुष्य से दूर रहना पसंद करते हैं।

प्रकृति को क्यों बचाना चाहिए

हमारे अस्तित्व के लिए प्रकृति और प्राकृतिक संसाधन महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, हम जंगलों से लकड़ी, चारा, जंगली फल, मशरूम, दवायें, शहद आदि इकट्ठा करते हैं; दैनिक कार्य, घरेलू पशुओं और खेती के लिए नदियों और नालों से पानी का उपयोग करते हैं; और हमारे भेड़, बकरी, गाय, भैंस, घोड़े और खच्चर चरने के लिए घास के मैदानों पर निर्भर रहते हैं। प्रदूषण रहित पर्यावरण और प्रकृति के बिना हम लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाएंगे और हमारे जंगली जानवर और पेड़-पौधे भी हमारे साथ मर जाएंगे। इस प्रकार यह हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वे जिम्मेदार रूप से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करें, प्रकृति और वन्य जीवों का संरक्षण करें, और पर्यावरण को शुद्ध रखें।